17 नवम्बर 2019, कुल पृष्ठ : 8, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 JaipurCity / 224 / 2018-20

जैन पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के व्याख्यान प्रतिदिन अब आधे घंटे जिनवाणी चैनल पर

जिनवाणी JINVANI सुख, शान्ति, समृद्धि प्रतिदिन

प्रातः 6.30 से 7.00 बजे तक

वर्ष : 42, अंक : 16

नवम्बर (द्वितीय), 2019 (वीर नि.संवत्-2546)

सह-सम्पादक :

डॉ. संजीवकुमार गोधा व पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल

आजीवन शुल्क : 251 रुपये

वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

अब तक हमारे पास था वो बिन्दास सा रतन
लाखों में वो बस एक था हरदास का रतन
तेजस्वी था वह सूर्य सा व चाँद सा शीतल
सिन्धु में अब खो गया वो नायाब सा रतन

छपते-छपते...

बड़े दादा नहीं रहे...

सादा जीवन उच्च विचार के जीते जागते उदाहरण, शांत व सौम्य मुद्रा के धनी, अत्यंत सरल व्यक्तित्व, वात्सल्यमूर्ति, सरल परिणामी, मृदुभाषी, अद्वितीय लेखक, जैनपथप्रदर्शक के सम्पादक, श्री टोडरमल दिग. जैन सिद्धांत महाविद्यालय के यशस्वी प्राचार्य जयपुर निवासी अध्यात्मरत्नाकर पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल का दिनांक 12 नवम्बर को अत्यंत शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया।

(जैनपथप्रदर्शक का आगामी अंक पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल की स्मृति में प्रकाशित किया जायेगा, आप उनके बारे में श्रद्धांजलिस्वरूप अपने आलेख, कविता आदि दिनांक 24 नवम्बर के पूर्व हमें वाट्सएप नं. 9660668506 पर उपलब्ध करा देवें।)

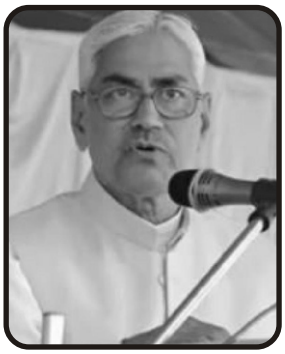

पण्डित वीरेन्द्रजी आगरा का चिर-वियोग

मुमुक्षु समाज के धीर, गंभीर वरिष्ठ विद्वान, सरल, मृदुभाषी, लोकप्रिय प्रवचनकार आगरा निवासी **पण्डित वीरेन्द्रकुमारजी जैन** का दिनांक 6 नवम्बर को अत्यंत शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया।

दिनांक 9 नवम्बर को टोडरमल स्मारक भवन में पण्डित वीरेन्द्रकुमारजी आगरा की स्मृति में श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया, जिसमें डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल एवं डॉ. शान्तिकुमारजी पाटील द्वारा उनका सामान्य परिचय दिया गया। सभा में दैनिक स्वाध्याय सभा के श्रोताओं के अतिरिक्त सभी विद्यार्थीगण भी उपस्थित थे। सभी ने पण्डित वीरेन्द्रजी के लिये शीघ्र मुक्तिपद प्राप्ति की भावना भायी। इसके अतिरिक्त **जौहरी बाजार** स्थित श्री दि. जैन तेरापंथी बड़ा मंदिर में भी श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया, जिसमें डॉ. संजीवकुमारजी गोधा, श्री निहालचंदजी जैन पीतल फैक्ट्री आदि ने उनके प्रति हृदयोद्गार व्यक्त किये।

दिवंगत आत्मा चतुर्गति के दु:खों से छूटकर शीघ्र ही अनन्त अतीन्द्रिय आनंद को प्राप्त हो - यही मंगल भावना है।

भगवान महावीर के विश्वव्यापी संदेश

4

– पण्डित रतनचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे...)

हम भगवान महावीर स्वामी के पूर्वभवों को देखें। जब हम इस दृष्टि से सोचते हैं तो लगता है कि भगवान महावीर के पूर्वभव वस्तुतः हमारे आत्मकल्याण के लिए अजस्र प्रेरणा के स्रोत हैं।

भगवान महावीर की कहानी पुरुरबा नामक भील की पर्याय से प्रारंभ होती है, पुरुरबा भील जीवनभर हिंसक-हत्यारा रहा; किन्तु प्रसंग पाकर जब वह पत्नी की प्रेरणा से गुफा में साधनारत मुनिराज की हत्या के महापाप से बच गया, तो उसका हृदय अपने पूर्व में किए दुष्कृत्यों के कारण आत्म-ग्लानि से भर उठा और पश्चाताप की ज्वाला में पापों को भस्म करके आजीवन हिंसा के त्याग के फलस्वरूप सौधर्म स्वर्ग में देव हुआ। इससे हमें यह प्रेरणा मिलती है कि यदि अबतक हमारा जीवन पापमय भी रहा हो; तथापि शेष भावी जीवन को हम पवित्र बनाकर आत्मकल्याण कर सकते हैं।

इसीतरह मारीचि के भव में महावीर के जीव ने जीवनभर जिनवाणी का विरोध किया, ३६३ मिथ्यामतों का प्रचार किया; तथापि धर्मबुद्धि से मन्दकषायपूर्वक किए गए कार्यों के फलस्वरूप समतापूर्वक देह त्यागने के कारण वह ब्रह्म स्वर्ग में देव हुआ। यहाँ इतना विशेष जानना चाहिए कि मिथ्यात्व दशा में बहुत काल तक मंदकषाय नहीं रह सकती। यही कारण है कि मारीचि का जीव अपने १३ भव मनुष्य व देवगति में बिताकर अन्ततोगत्वा जड़वत् होकर एकेन्द्रिय रूप स्थावर पर्यायों में एवं दोइन्द्रियादि की त्रस पर्यायों में चला गया और वहाँ असंख्य भव धारण करना पड़े। एक ओर मंदकषाय का फल स्वर्ग बताया तो वहीं दूसरी ओर मिथ्यात्व के महापाप का फल त्रस व स्थावर योनियों में भी जाना पड़ा। एतदर्थ सबसे पहले मिथ्यात्व महापाप ही त्यागने योग्य है।

फिर वह काललब्धि के बल से पुनः ब्राह्मण कुल में जन्मा, वहाँ से चौथा स्वर्ग, फिर विश्वनंदी राजकुमार, त्रिपृष्ठ नारायण एवं सातवें नरक के नारकी के भवों के बाद, महावीर से पूर्व दसवें भव में सिंह पर्याय में उत्पन्न हुआ।

भगवान महावीर ने आत्मा से परमात्मा बनने की प्रक्रिया इसी पर्याय में प्रारम्भ की थी। धन्य है वह पशु जिसने अपनी इस पामर पर्याय में उत्पन्न होकर भी आत्मा को जाना/पहचाना और मोक्षमार्ग की प्रथम सीढ़ी पर आरूढ़ हो गया।

इसप्रकार भगवान महावीर ने आत्मा से परमात्मा बनने की प्रक्रिया इसी पर्याय में प्रारंभ की थी।

उपर्युक्त कथन से हम यह सबक सीख सकते हैं कि जब भील भगवान बन सकता है अर्थात् मिथ्यादृष्टि बहिरात्मा-पापी जीव परमात्मा बन सकता है, शेर की पर्याय में सन्मति आ सकती है तो क्या हम मूँछ वाले समझदार कहलाने वाले मानव परमात्मा बनने का बीज भी नहीं बो सकते; क्यों नहीं बो सकते हैं? अवश्य बो सकते हैं।

तो आइये, हम सब संकल्प करें कि इस शेष जीवन को यों ही मोह-माया और विषय-कषायों में नहीं खोयेंगे। तथा जिनवाणी के अध्ययन-मनन और चिन्तन द्वारा तत्त्वाभ्यास करके परमात्मा की उपासना और आत्मा की साधना करके शीघ्र ही परमात्मपद प्राप्त करने का प्रयत्न करें।

हम भगवान की आराधना करते समय इस बात को न भूलें कि हममें व भगवान में कोई मौलिक भेद नहीं है, केवल भूत व वर्तमान का ही अन्तर है। अतः भगवान के सामने यह संकल्प करें कि हे महावीर! जो आप का वर्तमान है वह निःसंदेह हमारा भविष्य होगा। होगा, होगा और होगा।

समयसार : संक्षिप्त सार

समयसार शास्त्र को जितना कठिन समझ लिया गया है, वस्तुतः वह उतना कठिन है नहीं। कुन्दकुन्दाचार्य का मूल समयसार सुगम शैली और सरल भाषा में लिखा गया है। सरलीकरण के लिए स्थान-स्थान पर दैनिक जीवन के सरलतम उदाहरणों का प्रयोग भी उसमें हुआ है।

कठिन लगने का मूल कारण ग्रन्थ की कठिनता नहीं, बल्कि तत्सम्बन्धी अनादिकालीन अपरिचय और अनाभ्यास है। यदि हम इसका रुचिपूर्वक अभ्यास करें, नियमित स्वाध्याय

द्वारा ग्रन्थ की विषयवस्तु से परिचित होने का प्रयत्न करें तो अल्पकाल में ही हमें यह ग्रन्थ अत्यन्त सरल प्रतीत होने लगेगा।

इस ग्रन्थ के कठिन लगने का दूसरा कारण इस ग्रन्थ पर लिखी गई विस्तृत एवं गंभीरतम आचार्य अमृतचन्द्र की 'आत्मख्याति' एवं आचार्य जयसेन की 'तात्पर्यवृत्ति' टीकाएँ भी हो सकती हैं। यद्यपि इन दोनों टीकाओं ने आचार्य कुन्दकुन्द के हृदय के भावों को खोल कर रख दिया है; परन्तु ये टीकाएँ संस्कृत-निष्ठ और वृहदाकार होने से संस्कृत भाषा एवं सूक्ष्म तत्त्व से अनभिज्ञ पाठकों को कठिन लगना अस्वाभाविक नहीं है; परन्तु यदि चित्त स्थिर करके हिन्दी अनुवादों के माध्यम से स्वाध्याय करने का दृढ़ संकल्प कर लें तो यह काम कठिन नहीं हैं। किन्तु जिन्हें इस भवताप हारी एवं उत्तम सौख्यकारी-समयसार ग्रन्थ की महिमा आयेगी, वे ही ऐसा संकल्प करेंगे।

देखो इस समयसार परमागम की स्वयं आचार्य कुन्दकुन्द के हृदय में कितनी महिमा थी? यह उन्हीं के शब्दों में द्रष्टव्य है। समयसार का उपसंहार करते हुए वे कहते हैं कि -

''जो भव्य आत्मा इस समयाप्राभृत को पढ़कर और उसे अर्थ तत्त्व से जानकर अर्थभूत शुद्धात्मा में ठहरेगा, वह उत्तम सौख्य स्वरूप हो जायगा।''[१]

आचार्य कुन्दकुन्द को अपने इस ग्रन्थ का नाम 'समयपाहुड' रखना ही अभीष्ट था। उन्होंने प्रथम गाथा के उत्तरार्द्ध में ग्रंथ बनाने के प्रतिज्ञा वाक्य में ग्रंथ का नामकरण करते हुए स्वयं कहा है - 'वोच्छामि समयपाहुडमिणं' अर्थात् में 'समयपाहुड' ग्रंथ को कहता हूँ। तथा अन्त में समापन करते हुए पुनः ४१५ गाथा में जो 'समयपाहुडमिणं' कहकर 'समयपाहुड' नाम की पुष्टि की है। इससे स्पष्ट है कि आचार्यदेव ने तो इस ग्रन्थ का नामकरण 'समयपाहुड' ही किया था, परन्तु बाद में प्रवचनसार, नियमसार आदि ग्रन्थों के नामों के समान 'समयपाहुड' भी 'समयसार' नाम से ही विख्यात हो गया। प्रस्तुत ग्रन्थ की १४१, १४४ एवं १४९वीं गाथा में 'समयसार' शब्द का प्रयोग भी मिलता है। इसी ग्रन्थ की 'आत्मख्याति' टीका के मंगलाचरण में भी 'नमः समयसाराय' की व्याख्या करते हुए कहा गया है - ''समय अर्थात् जीव नामक पदार्थ, उसमें सार जो द्रव्यकर्म, भावकर्म व नोकर्म रहित शुद्ध आत्मा, उसे मेरा नमस्कार हो।'' 'समयसार' नाम प्रचलन में आने का एक कारण यह भी हो सकता है; परन्तु 'समयपाहुड' व 'समयसार' दोनों नामों का अर्थ लगभग एक ही है।

आचार्य कुन्दकुन्द ने स्वयं 'समयो खलु णिम्मलो अप्पा' कहकर निर्मल आत्मा को 'समय' कहा है तथा जयसेनाचार्य ने 'प्राभृतं सारं सारः' कहकर प्राभृत का अर्थ आत्मा का शुद्ध स्वरूप किया है। समयसार का अर्थ भी शुद्धात्मा ही होता है। वस्तुतः आत्मा का शुद्धस्वरूप ही समयसार है और आत्मा के शुद्ध स्वरूप का प्रतिपादक होने से इस ग्रंथ का 'समयसार' या 'समयपाहुड' नाम भी सार्थक है।

यह 'समयपाहुड' नाम सीधा द्वादशांग वाणी से सम्बद्ध है; क्योंकि गणधरदेव द्वारा रचित द्वादशांग वाणी के जो चौदह पूर्व रूप प्रभेद हैं, उनमें प्राभृत (पाहुड) नामक एक अवान्तर अधिकार है। उन्हीं पूर्वों का यत्किंचित् ज्ञान आचार्य कुन्दकुन्द को था जो समयपाहुड के रूप में निबद्ध हुआ है।

समयपाहुड में आत्मतत्त्व का जैसा प्रतिपादन है, वैसा जैन वाङ्मय में अन्यत्र दुर्लभ है। उसे कुन्दकुन्द ने स्वयं श्रुतकेवली-कथित कहा है।

१. जीवाजीवाधिकार : भेदविज्ञान का अधिकार -

समयसार परमागम के जीवाजीवाधिकार में भेदविज्ञान का जैसा सूक्ष्मतम विश्लेषण हुआ है, वैसा अन्यत्र विरल है। इसमें शुद्ध जीवपदार्थ का अजीवपदार्थों से भेदज्ञान कराते हुए यहाँ तक कह दिया गया है कि एक निज शुद्धात्मतत्त्व के सिवाय अन्य समस्त परपदार्थ अजीव तत्त्व हैं। जड़-अचेतन पदार्थ तो अजीव हैं ही, अन्य अनंत जीव राशि को भी निज ज्ञायकस्वभाव से भिन्न होने के कारण अजीव तत्त्व कहा गया है। तथा अपने आत्मा में उत्पन्न होने वाले क्षणिक क्रोधादि विकारीभावों तथा मति-श्रुतज्ञानादि अपूर्ण पर्यायों को भी अपने त्रिकाल परिपूर्ण ज्ञायक स्वभाव

१. जो समयपाहुडमिणं पढिदूणं अत्थतच्चदो णादुं।
अत्थे ठाही चेदा सो होही उत्तमं सोक्खं।।४१५।।

से भिन्न होने के कारण अजीव तत्त्व कहा है।

ऐसा जीव नामक शुद्धात्मतत्त्व देह एवं रागादि औपाधिक भावों से भिन्न हैं - यह बात स्पष्ट करते हुए आचार्य अमृतचंद ने कहा है कि चैतन्यशक्ति से व्याप्त जिसका सर्वस्व सार है ऐसा यह जीव इतना मात्र ही है। इस चित्शक्ति से अन्य जो भी औपाधिक भाव हैं, वे सब पुद्गलजन्य हैं, अतः पुद्गल ही हैं।[१]

उन पौद्गलिक और पुद्गलजन्य भावों का उल्लेख करते हुए आचार्य कुन्दकुन्द कहते हैं कि जीव के वर्ण, गन्ध, रस व स्पर्श नहीं है; शरीर, संस्थान, संहनन भी नहीं है; तथा राग, द्वेष, मोह, कर्म व नोकर्म भी नहीं है; वर्ग, वर्गणा और स्पर्धक भी नहीं है, अध्यात्म के स्थान, अनुभाग के स्थान, योगस्थान, बंधस्थान, उदयस्थान, मार्गणास्थान, जीवस्थान आदि कुछ भी नहीं है; क्योंकि ये सब तो पुद्गलद्रव्य के परिणाम होने से अपनी अनुभूति से भिन्न हैं। जीव तो परमार्थ से चैतन्यशक्तिमात्र है।[२]

गुणस्थानादि को यद्यपि व्यवहार से जीव कहा गया है, पर वे सब वस्तुतः ज्ञायकस्वभाव से भिन्न होने से जीव के भाव ही नहीं है और जीवस्वरूप भी नहीं है। आचार्य अमृतचंद्र ने भी इसी बात पर अपनी मुहर (छाप) लगाते हुए कहा है कि वर्णादिक व रागादिक भाव आत्मा से भिन्न हैं, इसलिए अन्तर्दृष्टि से देखने वाले को ये सब दिखाई नहीं देते। उसे तो मात्र एक चैतन्यभावस्वरूप सर्वोपरि आत्मतत्त्व ही दिखाई देता है।[३]

(क्रमशः)

१. समयसार, गाथा ३८ २. समयसार, गाथा ५० से ५५
३. समयसार, कलश ३६

भगवान महावीर निर्वाणोत्सव संपन्न

(1) जयपुर (राज.) : यहाँ ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन में दिनांक 27 अक्टूबर को भगवान महावीर निर्वाणोत्सव मनाया गया।

इस अवसर पर प्रातः नित्य-नियम पूजन के उपरान्त पंचतीर्थ जिनालय में एवं सीमंधर जिनालय में निर्वाण श्रीफल समर्पित किया गया। तत्पश्चात् डॉ. शान्तिकुमारजी पाटील द्वारा '**भगवान महावीर के सिद्धान्त**' विषय पर विशेष व्याख्यान हुआ।

जौहरी बाजार स्थित श्री दिगम्बर जैन तेरापंथी बड़ा मंदिर में डॉ. संजीवकुमारजी गोधा द्वारा 'धन्य तेरस एवं दीपावली' विषय पर मार्मिक प्रासंगिक प्रवचन हुआ, जिसका उपस्थित जनसमुदाय के अतिरिक्त डॉ. संजीवगोधा के यूट्यूब चैनल पर लगभग 9-10 हजार लोगों ने लाभ लिया।

(2) देवलाली-नासिक (महा.) : यहाँ पूज्य श्री कानजीस्वामी स्मारक ट्रस्ट में दिनांक 25 अक्टूबर से 29 अक्टूबर तक महावीर निर्वाणोत्सव, नियमसार महामंडल विधान एवं आध्यात्मिक व्याख्यानमाला का आयोजन हुआ।

इस अवसर पर अन्तरराष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त विद्वान **डॉ.हुकमचंदजी भारिल्ल** द्वारा तत्त्वचिन्तन व सहजता विषय पर प्रवचनों के अतिरिक्त पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली, ब्र. हेमचंदजी 'हेम' देवलाली, पण्डित अनिलजी शास्त्री भिण्ड आदि विद्वानों द्वारा अलग-अलग विषयों पर व्याख्यानों का लाभ प्राप्त हुआ। पूजन-विधान का कार्य ब्र.अभिनन्दनजी शास्त्री खनियांधाना के निर्देशन में पण्डित दीपकजी धवल भोपाल व पण्डित उर्विशजी शास्त्री देवलाली द्वारा संपन्न हुआ।

(3) दिल्ली : यहाँ न्यू उस्मानपुर में महावीर निर्वाणोत्सव के अवसर पर श्री शान्तिनाथ दिगम्बर जैन मन्दिर में 50 वर्षों में पहली बार दिनांक 26 अक्टूबर को '**जैनधर्म के आलोक में दीपावली**' विषय पर आध्यात्मिक गोष्ठी का आयोजन किया गया।

गोष्ठी की अध्यक्षता डॉ. वीरसागरजी शास्त्री दिल्ली ने की।

इस अवसर पर संयमजी शास्त्री, संदेशजी जैन, संयमजी जैन, दीपकजी जैन, आत्मार्थी भव्या एवं वर्धमान श्रुति जैन ने अपने विचार व्यक्त किये। गोष्ठी का मंगलाचरण अरिहंत जैन ने किया। इसके अतिरिक्त दिनांक 28 अक्टूबर को पण्डित ऋषभजी शास्त्री व पण्डित संजीवजी उस्मानपुर के निर्देशन में विशेष भक्ति-संध्या का आयोजन हुआ।

- संयम शास्त्री

ढाईद्वीप जिनायतन में विशेष संगोष्ठी संपन्न

इन्दौर (म.प्र.) : यहाँ ढाईद्वीप जिनायतन में वेदी शिलान्यास के अवसर पर दिनांक 2 नवम्बर को '**आचार्यकल्प पण्डित टोडरमलजी**' विषय पर एक संगोष्ठी का आयोजन हुआ, जिसकी अध्यक्षता ब्र. अभिनन्दकुमारजी शास्त्री ने की। मुख्य अतिथि के रूप में श्री अजितप्रसादजी दिल्ली एवं विशिष्ट अतिथि के रूप में श्री प्रमोदजी मकरोनिया सागर, श्री हितेशभाई चौवटिया मुम्बई, श्री अशोकभाई वाधर जामनगर उपस्थित थे।

वक्ताओं के अन्तर्गत डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर, पण्डित पीयूषजी शास्त्री जयपुर, पण्डित सुनीलजी जैनापुरे राजकोट ने अपना वक्तव्य प्रस्तुत किया।

संगोष्ठी का मंगलाचरण पण्डित अनेकान्तजी शास्त्री रहली ने एवं संयोजन व संचालन डॉ. शान्तिकुमारजी पाटील जयपुर ने किया।

विश्व की अद्वितीय निर्माणाधीन रचना ढाईद्वीप जिनायतन में –

वेदी शिलान्यास एवं संगोष्ठी संपन्न

इन्दौर (म.प्र.) : यहाँ ढाईद्वीप जिनायतन में विराजमान होने वाली सबसे बड़ी स्फटिक मणि की सीमन्धर भगवान, स्वर्णमयी आदिनाथ भगवान एवं रजतमयी महावीर भगवान की प्रतिमा की वेदी का शिलान्यास महोत्सव दिनांक 1 से 3 नवम्बर तक संपन्न हुआ।

इस अवसर पर आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी के सी.डी. प्रवचनों के अतिरिक्त डॉ. शान्तिकुमारजी पाटील जयपुर, डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर, पण्डित सुनीलजी जैनापुरे राजकोट, श्री हितेशभाई चौवटिया मुम्बई आदि विद्वानों द्वारा प्रवचनों का लाभ मिला।

दिनांक 1 नवम्बर को मंगल कलश स्थापना व शोभायात्रा के बाद ध्वजारोहण श्री श्रवणकुमारजी श्रेयकुमार जैन परिवार दिल्ली द्वारा; मण्डप उद्घाटन श्रीमती मीनाबेन अरविन्दभाई दोशी गोन्डल, मंच उद्घाटन मुमुक्षु मण्डल दाहोद द्वारा किया गया। ध्वजारोहण मंगलाचरण दाहोद पाठशाला के बालकों द्वारा किया गया। चित्र अनावरण के अन्तर्गत आचार्य कुन्दकुन्द का चित्र अनावरण श्री कमलकुमारजी बड़जात्या मुम्बई, आचार्य धरसेन का चित्र अनावरण श्री आनंदजी पाटनी इन्दौर, पण्डित टोडरमलजी का चित्र अनावरण श्री आदीशजी जैन दिल्ली एवं गुरुदेवश्री का चित्र अनावरण श्री हितेशभाई चौवटिया मुम्बई द्वारा किया गया। तत्पश्चात् 24 तीर्थंकर मंडल विधान का आयोजन श्री विजयभाई वाधर परिवार हुआ।

दिनांक 2 नवम्बर को शिलान्यास की विधि संपन्न हुई। महोत्सव में विभिन्न स्थानों से बड़ी संख्या में आये श्रद्धालुओं के साथ-साथ श्री निमेषभाई शान्तिलालजी शाह मुम्बई, श्री हितेन अनंतभाई शेठ मुम्बई, श्री अशोकभाई वाधर जामनगर, श्री अजितप्रसादजी दिल्ली, श्रीमती शोभा रसिकलाल धारीवाल पूना, श्रीमती सोनल मुकेश जैन, श्रीमती हर्षाबेन राजेशभाई जवेरी अहमदाबाद आदि गणमान्य अतिथियों ने सोने व चांदी से बनी ईंटों के साथ वेदी का शिलान्यास किया। इसके पूर्व 108 बहनों द्वारा स्वर्ण कलश से कार्यक्रम स्थल की शुद्धि की गई और हीरा माणक आदि नवरत्नों को कलश में डालकर वेदी का शिलान्यास पूर्ण हुआ।

कार्यक्रम में देश-विदेश से लगभग 2500 साधर्मीजन सम्मिलित हुए। इसके अतिरिक्त यूट्यूब पर लगभग 33 हजार लोगों ने कार्यक्रम का लाइव प्रसारण देखा।

इसी प्रसंग पर ढाईद्वीप के रचना निर्देशक डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर द्वारा **L.E.D.** प्रोजेक्टर के माध्यम से ढाईद्वीप में प्रतिष्ठित होने वाली 1143 जिनबिम्ब कहाँ किस प्रकार विराजमान होंगे – इसकी जानकारी दी।

दिनांक 3 नवम्बर को मंगल कलश स्थापना, शोभायात्रा एवं द्रव्यसंग्रह विधान का आयोजन किया गया।

विधि-विधान के समस्त कार्य ब्र. अभिनन्दनकुमारजी शास्त्री देवलाली के निर्देशन में पण्डित विवेकजी शास्त्री ने संपन्न कराये।

संपूर्ण आयोजन पण्डित विपिनजी शास्त्री मुम्बई के कुशल नेतृत्व में संपन्न हुआ।

अष्टाह्निका महापर्व संपन्न

टीकमगढ (म.प्र.) : यहाँ अष्टाह्निका महापर्व के अवसर पर दिनांक 4 से 12 नवम्बर तक ज्ञान मन्दिर में सिद्धचक्र महामण्डल विधान का आयोजन हुआ।

इस अवसर पर पण्डित राजेन्द्रकुमारजी जबलपुर द्वारा विधान की जयमाला, दोपहर में समयसार एवं रात्रि में 'युगलजी' द्वारा रचित सिद्धपूजन पर प्रवचनों का लाभ मिला। दिनांक 9 व 10 नवम्बर को विधान पर आधारित सिद्ध संगोष्ठी आयोजित हुई, जिसमें अनेक वक्ताओं ने अपना वक्तव्य दिया। विधि-विधान के समस्त कार्य पण्डित अभिनवजी शास्त्री जबलपुर एवं पण्डित यशजी शास्त्री पिड़ावा द्वारा पण्डित राजेन्द्रजी चंदावली के सहयोग से संपन्न हुये।

सिद्धक्षेत्र सोनागिर (म.प्र.) : यहाँ अष्टाह्निका महापर्व के अवसर पर कुन्दकुन्द नगर में दिनांक 4 से 12 नवम्बर तक श्री सिद्धचक्र महामंडल विधान का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर गुरुदेवश्री के सी.डी. प्रवचनों के अतिरिक्त डॉ. विनोदजी शास्त्री 'चिन्मय', डॉ. मुकेशजी शास्त्री 'तन्मय' विदिशा, ब्र. सुनीलजी शास्त्री शिवपुरी, पण्डित संजयजी पुजारी खनियांधाना आदि विद्वानों द्वारा प्रवचनों का लाभ प्राप्त हुआ। रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रमों का भी आयोजन हुआ। विधि-विधान के समस्त कार्य विधानाचार्य पण्डित अश्विनजी नानावटी एवं पण्डित प्रवीणजी शास्त्री ग्वालियर द्वारा संपन्न हुए।

अजमेर (राज.) : यहाँ अष्टाह्निका महापर्व के अवसर पर श्री वीतराग-विज्ञान स्वाध्याय मंदिर में डॉ. दीपकजी जैन 'वैद्य' जयपुर द्वारा प्रात: ग्रन्थाधिराज समयसार के मोक्ष अधिकार, दोपहर में विभिन्न विषयों एवं सायंकाल मोक्षमार्गप्रकाशक के सम्यक्त्वसन्मुख मिथ्यादृष्टि प्रकरण पर प्रवचनों का लाभ मिला। इसके अतिरिक्त विदुषी श्रुति जैन द्वारा भी व्याख्यान हुआ। प्रात:काल सिद्धपरमेष्ठी विधान का आयोजन देवांशु जैन कोटा द्वारा कराया गया। **– प्रकाशचंद पाण्ड्या (मंत्री), अजमेर**

सागर (म.प्र.) : यहाँ अष्टाह्निका महापर्व के अवसर पर शांतिनाथ जिनालय मकरोनिया में दिनांक 4 से 11 नवम्बर तक श्री सिद्धचक्र महामण्डल विधान का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर रात्रिकालीन स्वाध्याय में प्रतिदिन डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर के विधान की जयमाला पर मोबाइल द्वारा लाइव प्रवचन का लाभ मिला। **– अरुण मोदी, सागर**

मैं ज्ञानानन्द स्वभावी हूँ

1

-डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

इस अंक से तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंद भारिल्ल द्वारा रचित 'मैं ज्ञानानन्द स्वभावी हूँ : एक अनुशीलन' प्रारम्भ हो रहा है। सभी पाठकगण अवश्य लाभ लेवें।

मैं स्वयं भगवान आत्मा हूँ तथा ज्ञान और आनन्द मेरा स्वभाव है।

मेरा यह ज्ञानस्वभाव केवलज्ञान के समान अतीन्द्रिय है तथा आनन्दस्वभाव, सुखस्वभाव भी अरिहन्तों और सिद्धों के अनन्त सुख के समान अतीन्द्रिय है।

अतीन्द्रिय है का तात्पर्य यह है कि इसमें इन्द्रियों की आधीनता नहीं है। **न ज्ञानस्वभाव इन्द्रियाधीन है** और **न आनन्दस्वभाव इन्द्रियाधीन है।**

यद्यपि ये ज्ञान और आनन्द अतीन्द्रिय हैं; पर ये पर्यायरूप नहीं हैं, प्रगट नहीं हैं, प्रगटपर्यायरूप नहीं हैं, **ये तो स्वभावरूप ही हैं।**

ज्ञान और आनन्द आत्मा का अर्थात् मेरा स्वभाव है और मैं स्वभाववान हूँ। इसप्रकार में ज्ञानानन्दस्वभावी आत्मतत्त्व हूँ।

आचार्यों का आदेश है कि **प्रतिदिन प्रातःकाल ब्रह्ममुर्हूत में जागकर सबसे पहले पंचपरमेष्ठी का स्मरण कर स्वयं के बारे में सोचना चाहिये,** आत्मस्वरूप का विचार करना चाहिये।

मैं कौन हूँ? मेरा स्वरूप क्या है? मैं कबसे हूँ, कबतक रहूँगा?

मेरा कौन है, मेरा कोई है भी या नहीं? क्या मेरा किसी से कोई सम्बन्ध नहीं है? यदि नहीं है तो क्यों नहीं है? यदि है तो कौन सा सम्बन्ध है?

मैं रहता कहाँ हूँ? मुझे कहाँ रहना चाहिये? मेरा काम क्या है? मैं क्या करता हूँ, क्या कर सकता हूँ, मुझे क्या करना चाहिये?

हमारे ज्ञान में स्वयं के संबंध में इसप्रकार के विचार प्रतिदिन जागने के साथ ही सहजरूप से उत्पन्न होना चाहिये।

हमारे हृदय में इसप्रकार के विचार उठते हैं या नहीं? यदि नहीं उठते हैं तो उठने चाहिये और उनका समुचित समाधान खोजा जाना चाहिये।

पण्डित आशाधरजी लिखते हैं -

ब्राह्मे मुहूर्त उत्थाय वृत्तपञ्चनमस्कृतिः।
कोऽहं को मम धर्मः किं व्रतं चेति परामृशेत्॥१॥[१]

ब्रह्म मुहूर्त में उठकर पंचनमस्कार मंत्र को पढ़ने के बाद 'मैं कौन हूँ, मेरा धर्म क्या है, व्रत क्या है' - इसप्रकार विचार करें।

श्रीमद् रायचन्द्रजी भी लिखते हैं -

मैं कौन हूँ? आया कहाँ से? और मेरा रूप क्या?
सम्बन्ध दुःखमय कौन है? स्वीकृत करूँ परिहार या॥
इसका विचार विवेक पूर्वक शान्त होकर कीजिये।
तो सर्व आत्मिक ज्ञान के, सिद्धान्त का रस पीजिये॥

मैं कौन हूँ, कहाँ से आया हूँ और मेरा स्वरूप क्या है? इस बात का विचार प्रतिदिन शान्तभाव से विवेकपूर्वक करना चाहिये।

आत्मार्थी के जीवन में इसप्रकार के प्रश्न प्रतिदिन उपस्थित होना ही चाहिये।

इसीप्रकार का भाव वादीभसिंहसूरि अपरनाम आचार्य अजितसेन ने अपने क्षत्रचूड़ामणि (जीवन्धर चरित्र) नामक प्रथमानुयोग के ग्रन्थ में भी प्रगट किया है; जो इसप्रकार है-

कोऽहं कीदृग्गुणः क्वत्यः किं प्राप्यः किं निमित्तकः।
इत्यूहः प्रत्यहं नो चेदस्थाने हि मतिर्भवेत्॥७८॥

मैं कौन हूँ, मेरे गुण कैसे हैं, मैं कहाँ से आया हूँ, प्राप्त करने योग्य क्या है, निमित्त क्या है - इसप्रकार के विचार प्रतिदिन होना चाहिये। **यदि इसप्रकार के विचार प्रतिदिन न हो तो उसकी बुद्धि अयोग्य स्थान में प्रवृत्त है** या **प्रवृत्त हो सकती है।**

१. धर्मामृत (सागार) छठवाँ अध्याय छन्द-१

'मैं ज्ञानानन्दस्वभावी हूँ' यह अध्यात्म गीत उक्त जिज्ञासाओं का सहज समाधान है; उक्त प्रश्नों का सहज, सरल उत्तर है।

इस गीत में १. दृष्टि के विषयभूत भगवान आत्मा का स्वरूप समझाया गया है। २. परमशुद्धनिश्चयनय का विषयभूत आत्मा का स्वरूप बताया गया है। ३. परमभावग्राही शुद्धद्रव्यार्थिकनय के विषयभूत अर्थ (पदार्थ) को प्रस्तुत किया गया है। ४. कर्मों के निरोधक ध्यान के ध्येय को स्पष्ट किया गया है।

इस गीत में आत्मा के ज्ञान और आनन्द - इन दो गुणों को आधार बनाया गया है। आत्मा के ज्ञानानन्द-स्वभाव को स्पष्ट किया गया है।

जब सिद्धान्त की बात चलती है, परिभाषाओं की बात चलती है, तब आत्मा को **ज्ञाता-दृष्टा आतमराम** कहा जाता है; पर अध्यात्म का प्रकरण हो तो दर्शन गुण का स्थान **आनन्द गुण ले लेता है** और **वाणी में 'मैं ज्ञानानन्दस्वभावी हूँ' फूट पड़ता है।**

जब आत्मानुभूति की बात हो तो फिर ज्ञाता-दृष्टा की अपेक्षा **'मैं ज्ञानानन्दस्वभावी'** ही ठीक है।

'मैं कौन हूँ, कैसा हूँ' का सहज स्वभाविक उत्तर **'मैं ज्ञानानन्द- स्वभावी'** ही ठीक है, समुचित है।

इस 'ज्ञानानन्दस्वभावी' गीत में परसे एकत्व-ममत्व छुड़ाया गया है, पर के कर्तृत्व और भोक्तृत्व का निषेध किया गया है; सबसे सभी प्रकार के सम्बन्धों से इन्कार किया गया है।

बस, मैं तो मैं ही हूँ, और कुछ नहीं; यह कहा गया है।

सम्पूर्ण गीत इसप्रकार है -

मैं ज्ञानानन्दस्वभावी हूँ

मैं हूँ अपने में स्वयं पूर्ण,
पर की मुझ में कुछ गन्ध नहीं।
मैं अरस, अरूपी, अस्पर्शी,
पर से कुछ भी सम्बन्ध नहीं।।१।।

मैं रंग-राग से भिन्न,
भेद से भी मैं भिन्न निराला हूँ।
मैं हूँ अखण्ड, चैतन्यपिण्ड,
निज रस में रमने वाला हूँ।।२।।

मैं ही मेरा कर्त्ता-धर्त्ता,
मुझ में पर का कुछ काम नहीं।
मैं मुझ में रहने वाला हूँ,
पर में मेरा विश्राम नहीं।।३।।

मैं शुद्ध, बुद्ध, अविरुद्ध, एक
पर-परिणति से अप्रभावी हूँ।
आत्मानुभूति से प्राप्त तत्त्व,
मैं ज्ञानानन्दस्वभावी हूँ।।४।।

इस गीत की लगभग प्रत्येक पंक्ति **'मैं'** पद से आरंभ होती है।

अन्त में पहले और तीसरे छन्द में **नहीं, नहीं;** तथा दूसरे और चौथे छन्द में **'हूँ' 'हूँ'** आता है। दूसरे और चौथे छन्द में विधिपरक (पोजेटिव) बात है और पहले और तीसरे छन्द निषेधपरक (नेगेटिव) बात है। इस प्रकार इस गीत में मैं **कैसा नहीं हूँ और कैसा हूँ - यह बताया गया है।**

इस गीत में मात्र आत्मा की बात नहीं है, **अपने आत्मा की बात है।** यहाँ यह नहीं कहा गया है कि आत्मा ज्ञानानन्दस्वभावी है, **पर यह कहा गया है कि मैं ज्ञानानन्द-स्वभावी हूँ। 'मैं' का अर्थ अपना आत्मा होता है। इस अन्तर को पहचानना चाहिये।**

यह अन्य पुरुष (थर्ड परसन) की बात नहीं है; अपितु यह उत्तम पुरुष (फर्स्ट परसन) की बात है। यह किसी अन्य की नहीं, अपनी बात चल रही है।

यह कोरी तत्त्वचर्चा नहीं है; जो एक कार्यक्रम बनकर रह जाती है। यह तो अपनी बात है, अपने घर की बात है; जो अपने में अपनेपन के साथ होना चाहिये।

यहाँ कोई और नहीं, और के लिये भी नहीं; यहाँ तो मैं, मेरे लिये और मेरी चर्चा कर रहा हूँ। यह 'मैं' एक पण्डित नहीं, सेठ नहीं, नेता नहीं, मनुष्य भी नहीं; यहाँ तो मैं एक ज्ञानानन्दस्वभावी आत्मतत्त्व हूँ।

वैसे हमारे अनेक नाम रख लिये जाते हैं; पर उनसे

क्या? वे नाम तो लोग अपने-अपने स्वार्थ से रख लेते हैं।

कविवर पण्डित दौलतरामजी ने ठीक ही लिखा है-

हम तो कबहुँ न निज घर आये।
पर घर फिरत बहुत दिन बीते, नाम अनेक धराये।
हम तो कबहुँ न निजघर आये।

जिसके दर पर गये, उसने एक नया नाम रख दिया। दुकानदार के पास गये तो उसने **ग्राहक** नाम रख दिया, वकील के पास गये तो वह **क्लाइन्ट** कहने लगा। डॉक्टर के पास गये तो उसने **मरीज** नाम रख दिया। क्या मैं मरीज हूँ, क्या मैं कहीं से भी मरीज जैसा लगता हूँ? इन धरे गये अस्थाई नामों से मुझे कुछ भी लेना-देना नहीं है।

नाम धराना कोई अच्छी चीज थोड़े ही है। **नाम धराना** हिन्दी भाषा का एक फ्रेज है; जो बदनाम होने के अर्थ में प्रयोग किया जाता है। यह तो एक प्रकार की बदनामी ही है। पर के साथ सम्बन्ध जोड़ने से बदनामी ही होती है। जब पर से मेरा कोई संबंध है ही नहीं, तो फिर उसके सम्बन्ध में अधिक कुछ सोचने की आवश्यकता ही क्या है? **(क्रमशः)**

ढाईद्वीप जिनायतन में नाटिका का मंचन

इन्दौर (म.प्र.) : यहाँ ढाईद्वीप जिनायतन में वेदी शिलान्यास के अवसर पर दिनांक 2 नवम्बर को रात्रि में टोडरमल महाविद्यालय के विद्यार्थियों द्वारा '**टोडरमल से टोडरमल स्मारक तक**' विषय पर सुन्दर नाटिका का मंचन किया गया।

मुख्य अतिथि के रूप में श्री अजितप्रसादजी दिल्ली एवं विशिष्ट अतिथि के रूप में श्री अशोकभाई वाधर जामनगर, श्री राहुलजी गंगवाल जयपुर आदि महानुभाव मंचासीन थे।

नाटक का निर्देशन सर्वज्ञजी भारिल्ल जयपुर एवं संचालन जिनेन्द्रजी शास्त्री जयपुर ने किया।

विशेष संगोष्ठी संपन्न

जयपुर (राज.) : यहाँ जौहरी बाजार स्थित श्री दिगम्बर जैन तेरापंथ बड़ा मंदिर में दिनांक 12 नवम्बर को पण्डित टोडरमलजी की 300वीं जन्मजयंती वर्ष के अवसर पर '**आचार्यकल्प पण्डित टोडरमल : व्यक्तित्व कर्तृत्व**' विषय पर टोडरमल महाविद्यालय के छात्रों द्वारा विशेष संगोष्ठी का आयोजन किया गया।

गोष्ठी में दिव्यांश जैन अलवर, समकित जैन ईसागढ, शाश्वत जैन भोपाल, संभव जैन दिल्ली, अंकुर जैन खड़ैरी, वैभव जैन ग्वालियर, विनय जैन मुम्बई ने अपना वक्तव्य प्रस्तुत किया।

गोष्ठी की अध्यक्षता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल ने की।

विशेष वक्ता के रूप में डॉ. शांतिकुमारजी पाटील, डॉ. संजीवकुमारजी गोधा, पण्डित पीयूषजी शास्त्री ने भी अपना वक्तव्य के माध्यम से पण्डित टोडरमलजी के व्यक्तित्व व कर्तृत्व पर प्रकाश डाला। साथ ही श्री विनयजी पापड़ीवाल ने कुछ महत्वपूर्ण तथ्य प्रस्तुत किये।

कार्यक्रम में बड़े मन्दिर के अध्यक्ष श्री विनोदजी कासलीवाल, श्री निहालचंदजी घेवरचंदजी जैन आदि अनेक महानुभाव भी उपस्थित थे। टोडरमल महाविद्यालय के सभी छात्रों सहित लगभग 350 साधर्मियों ने कार्यक्रम का लाभ लिया।

गोष्ठी का मंगलाचरण राहुल जैन अमायन एवं संचालन दुर्लभ जैन गुढाचन्द्रजी व चैतन्य जैन खड़ैरी ने किया। आभार प्रदर्शन पण्डित जिनकुमारजी शास्त्री ने किया।

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो - वीडियो, प्रवचन साहित्य एवं अन्य अनेक जानकारियों के लिये अवश्य देखें-
वेबसाईट - www.vitragvani.com
संपर्क सूत्र-श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई
Ph. : 022-26130820, 26104912, E-Mail - info@vitragvani.com
ये सभी प्रवचन सामग्री अब vitragvani एप पर भी उपलब्ध है।

प्रकाशन तिथि : 13 नवम्बर 2019

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
सह-सम्पादक : **डॉ.संजीवकुमार गोधा**, एम.ए.द्वय, नेट, एम.फिल (जैनदर्शन), पीएच.डी. एवं **पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल**
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें -
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
E-Mail : ptstjaipur@yahoo.com